महाराष्ट्र एज्यूकेशन सोसायटी
कनिष्ठ महाविदयालय/उच्च माध्यमिक विद्यालय
सत्र २ परीक्षा २०१८-२०१९

कक्षा - बारहवीं	**विषय :- हिंदी**	**अंक - ८०**
दिनांक :- ०८/०१ /२०१९		**समय - ३ घंटा**

प्र. 1 क) कृतिपत्रिका के लिए सूचनाएँ

1. **सूचना के अनुसार गदय, पदय तथा पुरक पठन की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।**
2. **सभी आकृतियों के लिए पेन का ही उपयोग करें।**
3. **आकृतियों में उत्तर पेन से ही लिखना आवश्यक है।**
4. **व्याकरण विभाग तथा रचना विभाग में पुछी गई कृतियों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं हैं।**

(१) गद्य विभाग - अंक -२०

कृति १ **(अ) परिच्छेद पढ़कर निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए :** **(०८)**

(१) संजाल पुर्ण कीजिए। **(२)**

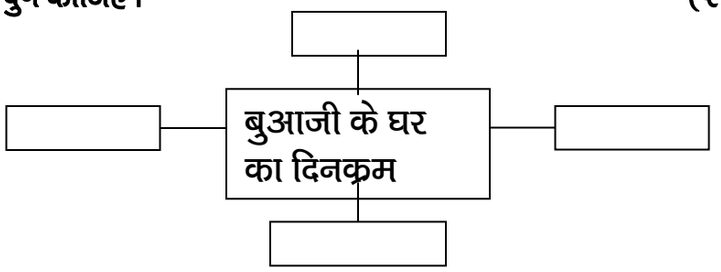

सब पर मानो बुआ जी का व्यक्तित्व हावी है। सारा काम वहॉ इतनी व्यवस्था से होता जैसे सब मशीनें हों, जो कायदे में बंधी, बिना रुकावट अपना काम किए चली जा रही है। ठीक पॉच बजे सब लोग उठ जाते, फिर एक घंटा बाहर मैदान में टहलता होता, उसके बाद चाय-दुध होता। उसके बाद अन्नू को पढ़ने के लिए बैढना होता। जो कपडे बुआ जी निकाल दें, वे ही पहनने होते। फिर कायदे से आकर मेज पर बैठ जाओ और खाकर काम पर जाओं।

सयानी बुआ का नाम वास्तव में ही सयानी था या उनके सयानेपन को देखकर लोग उन्हें सयानी कहने लगे थे, सो तो मैं आज भी नहीं जानती, पर इतना अवश्य कहूँगी कि जिसने भी उनका यह नाम रखा, वह नामकरण करने वाला विद्या का अवश्य पारखी रहा होगा।

बचपन में ही वे समय कि जितनी पाबंद थीं, अपना सामान सँभालकर रखने में जितनी पटू थी और व्यवस्था की जितनी कायल थीं, उसे दिखकर चकित हो जाना पडता था। कहते हैं, जो पेंसिल व एक बार खरीदती थीं, वह जब तक इतनी छोटी न हो जाती कि उनकी पकड में भी न आए तब तक उससे काम लेती थीं। क्या मजाल, ि कवह कभी खो जाए या बार-बार नोक टुटकर समय से पहले ही समाप्त हो जाए। जो रबर उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी थी, असे नौंवीं कक्षा में आकर समाप्त किया।

(२) १ कृति पूर्ण की जिए। (१)

बुआजी की विशेषताएँ
१.....
२.....

२ **कारण लिखिए** (१)

सयानी बुआ जी का नाम वास्तव में सयानी ही था .....

(३) १. अनेक शब्दो के लिए एक शब्द लिखिए (२)

१. परखने वाला -

२. किसी को नाम देना -

२. शब्दों के अर्थ लिखिए।

१. पटू -

२. कायल -

४ विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व लगभग ६ से ८ पंक्तिओं में स्पष्ट कीजिए। (२)

आ) परिच्छेद पढ़कर निम्नलिखीत कृति पुर्ण कीजिए : (८)

१ संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

मुक प्राणी -कुत्ते की विशेषताएँ

गुरुदेव यहाँ बडे आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड-भाड उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग उपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सुर्य की ओर ध्यानस्तिमित नयानों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कराए, बच्चों से जरा छेड -छाड की, कुशल प्रश्न पुछे और फिर चुप हो गए। ठीक उसी समय उनका कुत्ता-धीरे -धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खडा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह ऑखे मुँदकर अपने रोम -रोम से उस स्नेहरस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह ऑखे मूँदकर अपने रोम रोम से उस स्नेहरस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोंगो की ओर देखकर कहा, ‘‘देखा तुमने, यह आ गए। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहा हूँ, आश्चर्य हैं। और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं देखाई थी, ने उसे यह बताया था कि उसके स्नेहल यहाँ से दो मिल दुर है और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने ‘आरोग्य’ में इस भाव की एक कविता लिखी थी - ‘‘ प्रतिदिन प्रात:काल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता हैं, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी -सी स्वीकृत पाकर ही उसके अंग अंग मे आनंद का प्रवाह बह उठता हैं। इस वाक्य -हिन प्राणिलोक

में सिर्फ यही एक जीव अच्छा - बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका हैं, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता हैं, जिसमें अहैंतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता हैं, जिसकी चेतना असीम चैतन्यलोक में राह दिखा सकती हैं। जब मैं इस मुक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता हैं, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि, उसने अपने सहज बोध से मानस्वरुप में कौन -सा अमूल्य आविष्कार किया हैं, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती हैं, उसे समझाा नहीं पाती और मुझे इस दृष्टि से मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती हैं।'' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानवसत्य को देखा है, जो मनुष्य मनुष्य के अंदर भी नही देख पाता।

---

2 प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए। (२)

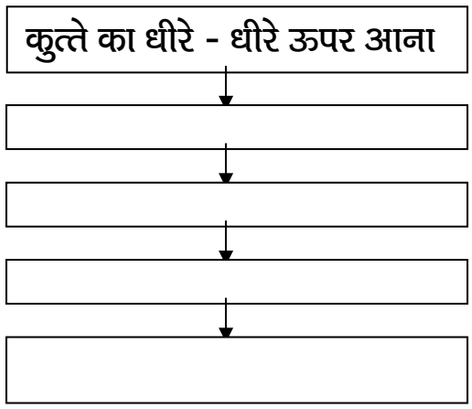

(३) विलोम शब्दों का उचित मिलान कीजिए **(२)**

अ. अच्छा	**१.अस्विकृति**
आ. स्वीकृति	**२. दुख**
इ. घृणा	**३. बुरा**
ई. आनंद	**४. प्रेम**

४ लगभग ६ से ८ पंक्तियों में उत्तर लिखिए। (२)
जानवरों के प्रति मनुष्यों में बढती असंवेदनशीलता पर प्रकाश डालिए।

(इ) ८० से १०० शब्दों में उत्तर लिखिए। (कोई एक) (४)

१ 'एक व्यवसाय में दृढता - पूर्वक लगे रहा श्रेयस्कर हैं।' लेखक माधवराव सप्रे के इस कथन को स्पष्ट किजिए।

२ एक मुठ्ठी छाँव कहानी का संदेश लिखिए।

३ 'रसायन और हमारा पर्यावरण' पाठ के द्वारा मिलेनेवाला संदेश लिखिए।

(२) - पद्य विभाग - अंक १६

कृति 2 (अ) पद्यांश पढकर सूचना के अनूसार कृतियॉ पूर्ण कीजिए। (६)

१ संजाल पूर्ण किजिए। (२)

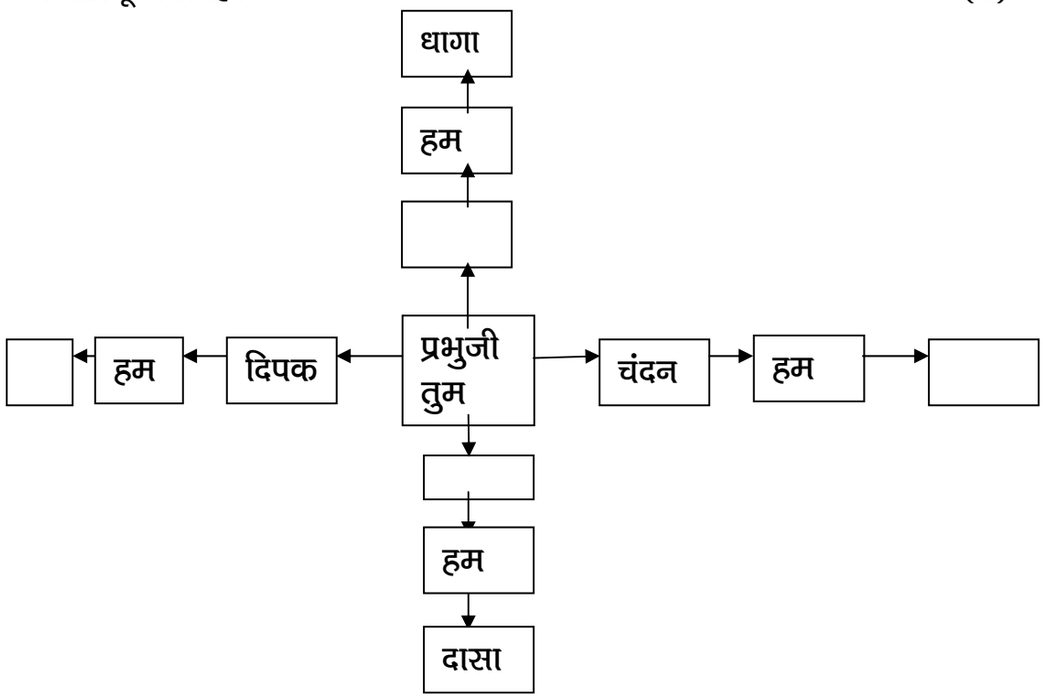

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी
जाकी अंग - अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरो।
जैसे चितवन चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती,
जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा,
जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा ,
ऐसी भगति करै रैदासा॥

2 **कृति पूर्ण कीजिए :** (२)

जैसे - चंदन - पानी

१. घन - ☐ ३. दीपक - ☐

२. चंद्रमा - ☐ ४. मोती - ☐

3 **प्रस्तुत पदयांश का भावार्थ अपने शब्दों में लगभग ६ से ८ पंक्तियों में लिखिए :** (२)

(आ). पद्यांश पढकर सुचना के अनुसार कृति कीजिए। (६)

१. संजाल पुर्ण कीजिए। **(२)**

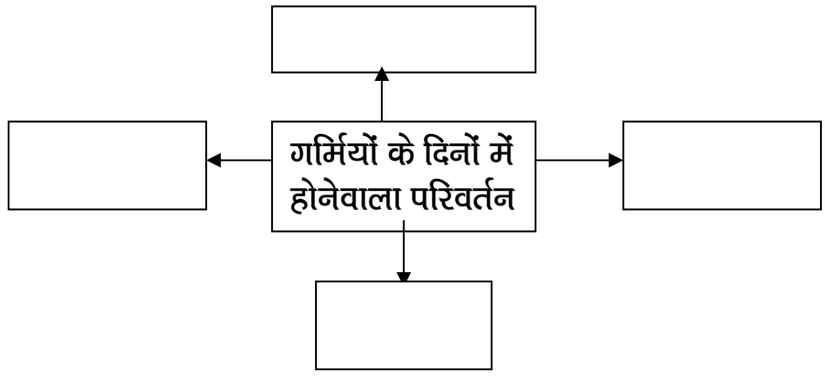

चढ रही थी धुप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रुप
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गई ,
प्राय: हुई दुपहर;
वह तोडती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार,

देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा -
मैं तोड़ती पत्थर।''

2 **'लू शब्द के अर्थ** **(१)**

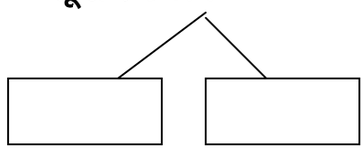

(३) निम्नलिखित शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द - **(१)**

भारी	
विशाल भवन	

४ उपर्युक्त पद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लगभग ६ से ८ पंक्तियों मे लिखिए। **(२)**

(इ) पद्यांश पढकर सूचना के अनूसार कृति कीजिए। **(४)**

१) संजाल पूर्ण किजिए। (२)

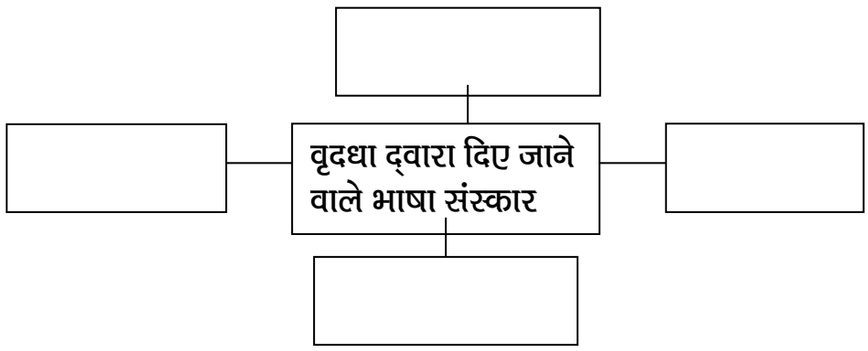

वृद्धाएँ धरती का नमक हैं,
किसी ने कहा था।
जो घर में हो कोई वृद्धा -
खाना ज्यादा अच्छा पकता हैं,
पर्दे - पेटीकोट और पायजामे भी दर्जी और रफूगरों के
मुहताज नहीं रहतें,
सजा -धजा रहता है घर का हर कमरा,
बच्चे ज्यादा अच्छा पलते हैं,
उनकी नन्हीं -मुन्नी उल्टियाँ सँभालती
जगती हैं वे रात - भर
उनके ही संग -साभ से भाषा में बच्चों की
आ जाती है एक अजब कौंध
मुहावरों, मिथकों, लोकोक्तियों,
लोकगीतों, लोकगाथाओं और कथा - समयकों की।

प्रस्तुत पदयांश का भावार्थ अपने शब्दों में लगभग ६ से ८ पक्तियों में लिखिए।

(३) - द्रुतवाचन विभाग - अंक १०

कृति ३	(३) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनूसार कृतियाँ कीजिए :	(६)
	(१) संजाल पुर्ण कीजिए :	(२)

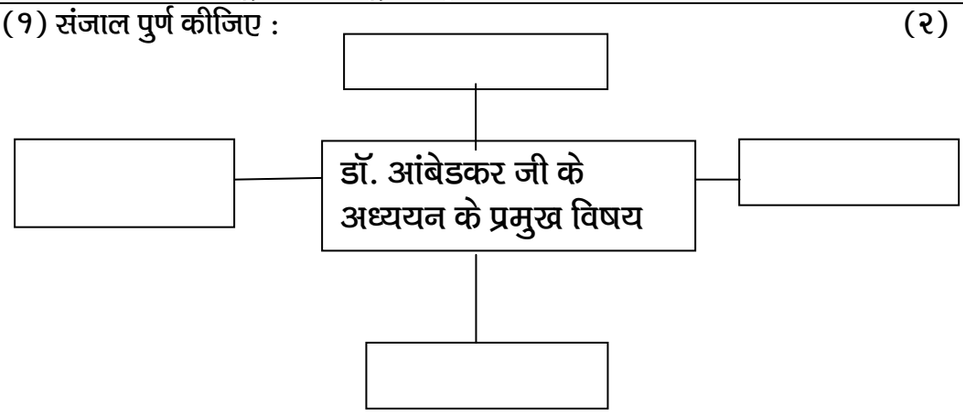

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने सन १९१२ में मुंबई के एलिफिस्टन कॉलेज से बी.ए. पास किया। ज्ञानसाधना के लिए वे दो बार विदेश में गए।
पहली बार डॉ. आंबेडकर ज्ञानसाधना के लिए अमेरिका गए, तो बडौदा नरेश महराजा सायजीराव गायकवाड द्वारा दी हुई शिष्यवृत्ति की सहायता से। महाराज मुंबई में थे। वे होनहार प्रतिभाशाली युवक भीमराव से बहुत प्रभावित थे। महूं में १४ अप्रैल, १८९१ मे जन्मे डॉ. आंबेकर उस समय इक्कीस वर्ष के थे। महाराजा सयाजीराव ने भीमराव से कहा, ''शिक्षामंत्री को अर्जी दे दो और मुझे सुचना दो।'' उन्होंने घर आकार अर्जी भेज दी। ग्यारह पाऊंड मासिक छात्रवृत्ति मंजूर हो गई। १४ जून, १९१६ तक तीन बरस के लिए यह वृत्ति थी। इसमें ये शर्ते थी कि ये तीन वर्ष विद्याध्ययन में ही व्यतीत करने पडेंगे और उपाधि मिलने पर दस बरस तक बडौदा राज्य मे. सेवा करनी होगी।

अमेरिका जाने की व्यवस्था तो हो गई , परंतु घर में खर्चे की क्या व्यवस्था होगी। आनंदराव, उनका बडा भाई, अकेला कमाने वाला था। घर में पॉच-छह मुँह खाने वाले थे। भीमराव ने शिक्षा विभाग से कुछ रूपए पेशगी लिए और उनमें से कुछ आनंदराव को दिए।

'एस.एस. अकोला' जहाज पर सवार होकर डॉ.आंबेडकर २१ जुलाई ,

१९१३ को अमेरिका पहुँचे पहले न्यूयॉर्क और वहॉ से कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में दाखिल हुए। वहॉ छात्रालय में एक सप्ताह ठहरकर काला पालिटन क्लब में जाकर रहने लगे। उनके अध्ययन के प्रमुख विभाग में अर्थशास्त्र प्रमुख विषय था, और
साथ में समाजविज्ञान, मानववंश विज्ञान और दर्शनशास्त्र। ये विषय लेकर
डॉ. भीमराव आंबेडकर एम.ए. का अध्ययन करने में जुट गए।

---

(२) कृति पूर्ण कीजीए। (१)

१

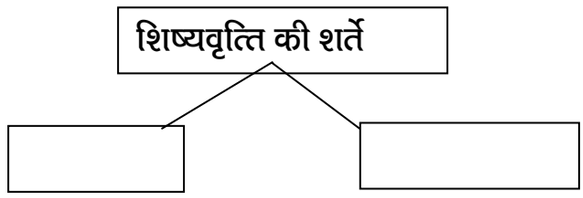

2 विदेश गमन हेतू भीमराव जी को मदद करने वाले (१)

१

2

३ 'छात्र जीवन में अध्ययन का महत्व' अपने शब्दों में ६ से ८ पंक्तियों में लिखिए। (२)

(आ) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनूसार कृतियॉ पूर्ण कीजिए। (४)

(१) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

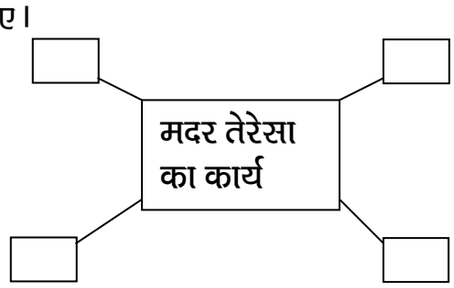

मानवता की सच्ची सेविका मदर टेरेसा का जन्म २६ अगस्त, १९१० को मक्दूनिया के एकोप्जे नामक स्थान पर हुआ। वे तीन भाई - बहनों में सबसे छोटी थीं तथा पिता एक सफल व्यापारी थे। १२ वर्ष की आयु में उन्होंने तय किया कि वे मिशनरी बनेंगी। १८ वर्ष की आयू में वे लोरेटो सिस्टर्स के लिए काम करने लगीं जो भारत में बहूत सक्रिय था।

२४ मई, १९३१ को उन्होने नन के रुप में शपथ ली तथा १९४८ तक कलकत्ता के सेंट मेरी स्कूल में अध्यापन करती रहीं। कलकत्ता में स्कुल आते-जाते समय वे प्राय: झोपडपटिटयों में बसे निर्धनो की दशा देख द्रवित हो जाती। एक बार उन्होंने मरणासन्न रोगी को देखा, जो कष्ट के कारण अंतिम साँसें भी नहीं ले पा रहा था।

मदर ने अपने अधिकारीयों से अनुमति लेकर, कलकत्ता में ' मिशनरी ऑफ चैरिटी' की स्थापना की। बेघर बच्चों के लिए स्कूल खोला, बीमार व्यक्तियों के लिए अस्पताल खोला और मरणासन्न रोगियों को भरपूर सेवा तथा स्नेह मिलने लगा कई दुसरी लडकियाँ भी सदस्या बन गई। वे भी पुरे प्रेमभाव से निर्धन तथा असहायों की सेवा करती। अनाथ बच्चों के लिए भी एक संस्था खोली गई। मदर लोगों के घर-घर जाकर खाना, दवाएँ तथा कपडे माँगती। कुछ समय बाद लोग स्वयं आकर चंदा देने लगे।
मदर के काम को विश्व स्तर पर सराहा गया क्योंकि केवल भारत में ही नहीं बल्कि एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमरीका, पोलैंड व ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में भी मदर की संस्था अपना कार्य करने लगी। १९६५ में पेाप जॉन पॉल ने मदर का देशों में अपनी सेवाएँ देने की आज्ञा दे दी।

मदर को अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। जिनमें पोप जॉन पीस प्राइज (१९७१), अंतराष्ट्रय शांति व सुझबुझ का नेहरु पुरस्कार, बाल्जान पुरस्कार, नोबेल पीस प्राइज तथा भारतरत्न आदि शामिल हैं। उन्होंने पुरस्कारों से प्राप्त धनराशि भी निर्धनों तथा रोगियों की सेवा मे ही लगा दी।

५ सिंतबर, १९९७ को अपने ८७ वें जन्मदिन के ठीक १० वे दिन मदर चल बसी। १९ अक्तूबर २००३ को मदर को 'ब्लैस्ड टेरेसा ऑफ कैलकटा' घोषित किया गया।

---

1 तलिका पूर्ण कीजिए

मदर तेरेसा को मिले पुरस्कार और सम्मान (२)

1- ……..
2-……
3-……
4-……

विभाग ४ - व्याकरण - अंक १०

कृति ४ अ निम्नलिखित वाक्यो में से किन्हीं दो वाक्यों का रचना के अनुसार भेद पहचानकर लिखिए :- (२)

१. भीड-भाड उतनी नहीं होती थी जितनी शांतिनिकेतन में।

२. दस बज गए थे लेकिन काम बनता नजर नहीं आया।

३. उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे।

(आ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही दो वाक्यों का कालपरिर्वतन करके वाक्य फिर से लिखिए। (२)

१ इंस्पेक्टर ने कसकर उसे एक हाथ लगाया। (अपुर्ण भुतकाल)

२ चित्रगुप्त ने रसीदी टिकट की बात सुनी । (सामान्य वर्तमानकाल)

३ आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। (सामान्य भविषकाल)

(इ) निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं दो के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (२)

(१) कलेजे मे तीर लगना

(२) डिंग हांकना

(३) पैरों पर खडा होना

(४) हिदायतें देना

(ई) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का भाववाचक संज्ञा रुप लिखिए। (१)

१ **सूना -**

२ **ठंडा -**

(उ) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का विशेषण रुप लिखिए :- (१)

१ भार -

२ शिक्षा -

(ऊ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुदध करके वाक्य फिर से लिखिए। (२)

१) उन्हें बडा बाबू के सलाह जंच गई।

२) मैं सबेरे गुरुदेव की पास उपस्थित था।

३) हमे संतर्क लगातार रहना होगी।

कृति ५ निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग २५० से ३०० शब्दों में निबंध लिखिए। (१०)

(१) नई शिक्षा पद्धति में छात्रों की भूमिका

(२) पेड़ की आत्मकथा

(३) मीडिया का बढ़ता प्रभाव

(४) यदि मैं किसान होता .....

(५) ऑखों देखी दुर्घटना

कृति ६ (अ) पत्रलेखन (५)

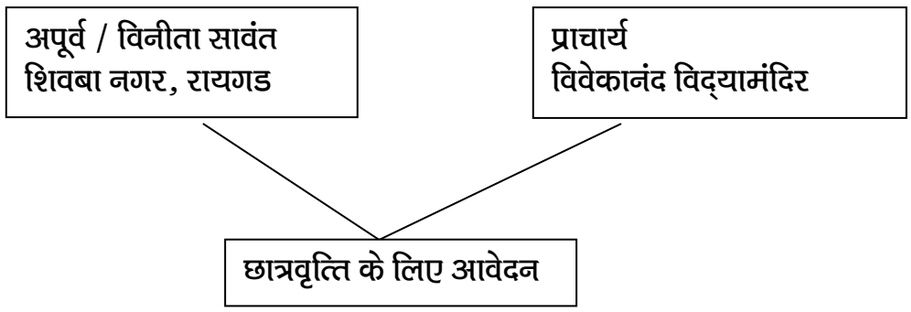

अथवा

वृत्तांत लेखन कीजिए।

अपने कनिष्ठ महाविद्यालय के क्रीडा महोत्सव का व

आ) निम्नलिखित अपठित गद्यखंड ध्यान से पढ़िए और उस पर आकलन हेतु केवल पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

नाट्यशास्त्र की परंपरा में आंगिक अभिनय की भाँति वाचिक अभिनय का महत्वपूर्ण स्थान हैं। इसे नाट्य का शरीर कहा जाता हैं। वाचिक अभिनय का मुख्य उद्देश्य वाणी के विविध प्रयोगों से है। इसमें गीत, संगीत और संवाद आदि का अभिव्यंजन किया जाता है। नाटक के गद्यात्मक तथा पद्यात्मक संवादों को गद्य और संगीत के द्वारा वाणी का उपयोग करके प्रस्तुत करने की क्रिया वाचिक अभिनय कहलाती हैं। बलाघात और लय की स्थितियाँ, स्वर सामंजस्य तथा उच्चारण वाचिक अभिनय के मुल तत्व माने जाते हैं। वाचिक अभिनय संवादों के साथ ही आवाज की स्पष्टता, प्रत्यक शब्द का सही तथा स्पष्ट रुप से उच्चारण, आवाज की गति में परिवर्तन, प्रसंगानुरुप ध्वनि परिर्वतन आदि बातों का ध्यान रखना होता है। बाल नाट्य के पात्र अगर बालक होते हैं तो इसमें वाचिक अभिनय की बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है। बाल कलाकार संवाद सहजता से तथा स्पष्ट रुप से बोल सके इसलिए उनके संवादों में जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर होता है।

अथवा

नौकरी के लिए साक्षात्कार का नमूना तैयार कीजिए।

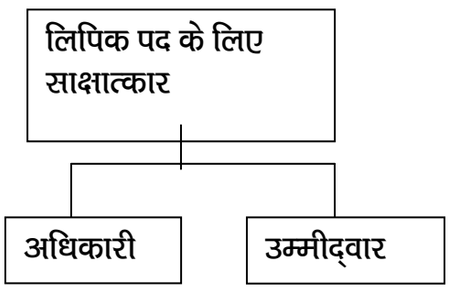

निम्नलिखित में से किन्हीं चार पारिभाषिक शब्दों के हिंदी शब्द लिखिए। (४)

1) Governer
2)Population
3) Accountant
4)Manager
5) Magistrate
6) Key- board
7) Commistion
8) Gravitation

अथवा

।